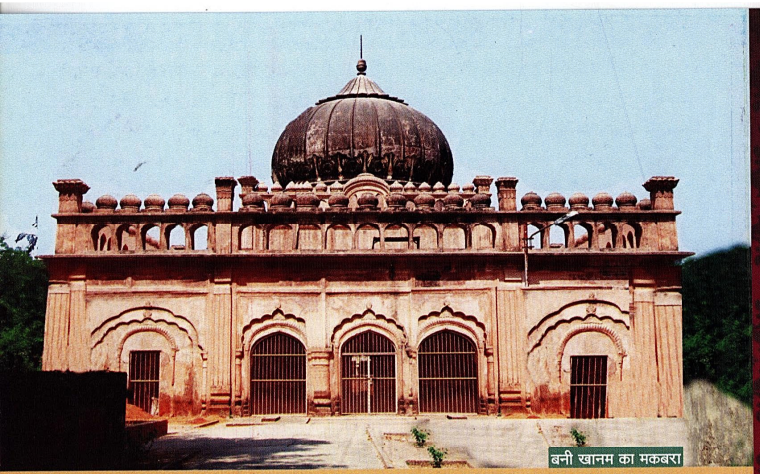

बनी खानम का मकबरा

अष्टकोणीय मण्डप हैं। मकबरे की छत सुन्दर पुष्प वल्लरियों से अलंकृत है। यह मकबरा सम्भवतः नवाबी काल के सबसे सुन्दर मकबरों में से एक है।

बनी खानम का मकबराः-

बनी खानम का मकबरा नवाबी काल का एक महत्वपूर्ण स्मारक है। बनी खानम नवाब नजम-उद्-दौला की पत्नी थीं। यह मकबरा बनी खानम के गुलाम अल्मस अली खां ने बनवाया था। इस इमारत का निर्माण १८ वीं सदी के उत्तरार्द्ध में किया गया। इस मकबरे का भूतल आयाताकार है जिस पर निर्मित वर्गाकार कक्ष के मध्य में कब्र स्थित है। गुम्बद पूर्णतया गुलाबबाड़ी शैली में बना है। इसके निर्माण में लखौरी ईंटो और गचकारी का प्रयोग किया गया है, परन्तु फर्श का निर्माण पत्थरों से किया गया है।

हाजी इकबाल का मकबराः-

हाजी इकबाल के मकबरे का निर्माण एक ऊंचे चबूतरे पर बुर्जयुक्त चहारदीवारी के अन्दर किया गया है, जो इसे अन्य इमारतों से अलग किलानुमा बनाता है। यह एक अष्टकोणीय संरचना है, जिसका निर्माण लखौरी ईंटों एवं चूने के प्लास्टर से किया गया है। केन्द्रीय गुम्बद के चारों तरफ छोटे-छोटे अन्य गुम्बद भी बने हैं। इस परिसर के पश्चिम की ओर १८ वीं सदी ई० में बनी एक मस्जिद भी स्थित है।

भ्रमण का समय

स्मारक प्रतिदिन सूर्योदय से सूर्यास्त तक खुला रहता है।

प्रवेश निःशुल्क

संपादक : डा. एन. के. सिन्हा
पाठ संकलन : श्री अब्दुल आरिफ
श्री अनिल कुमार सिंह
छायाचित्र : श्री ओ. पी. पाण्डेय
मानचित्र : श्री राम नरेश यादव

अधीक्षण पुरातत्त्वविद्
भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण,
सारनाथ मंडल, सारनाथ, वाराणसी,
उ० प्र०, २२१००७
फोन नं० ०५४२-२५९५००७, २५९५२०७
Email : circlesar.asi@gmail.com
Website : www.asisarnathcircle.org

© भा० पु० सर्वे०-२०१२

सत्यमेव जयते
प्रत्नकीर्तिमपावृणु

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

फैजाबाद

अधीक्षण पुरातत्त्वविद्
भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण
सारनाथ मंडल, सारनाथ
वाराणसी, उ० प्र०

फैजाबाद (अंक्षाश २६° ४६' ४७.२६" उत्तर, देशांतर ८२° ०९' २५.८२" पूर्व) सरयू (घाघरा) के दाहिनें तट पर लखनऊ से लगभग १३० कि० मी० पूर्व दिशा में तथा एतिहासिक स्थल अयोध्या से लगभग ८ कि० मी० उत्तर पूर्व दिशा में स्थित है। ऐसा कहा जाता है कि यह शहर अवध की राजधानी के रुप में मध्यकालीन नवाबों द्वारा स्थापित किया गया था। मूल रुप से ये नवाब ईरान के निशापुर के थे और शुरु में मुगलों के अधीन सूबेदार या नायब वजीर के तौर पर नियुक्त किए गए थे, लेकिन मुगल साम्राज्य के पतन के बाद इन नायब वजीरों ने स्वंय को अवध का नवाब घोषित कर दिया था।

अवध के नवाब :- मीर मुहम्मद अमीब मुसहली जो सादात खान के नाम से भी जाने जाते थे, ने इस वंश की स्थापना की थी। उन्होंने दिल्ली के कमजोर मुगल साम्राज्य का फायदा उठाया और १७२२ ई० में इस अवध वंश की नीव रखी। शुरुआत में उन्होंने फैजाबाद में सरयू के तट पर तम्बू में अपना दरबार लगाना शुरु किया और बाद में कई भवनों का निर्माण कराया। सादात खान की मृत्यु के बाद उनके दामाद और उत्तराधिकारी अब्दुल मंसूर खान (सफदरजंग के रुप में प्रसिद्ध है) ने फैजाबाद को शहर के रुप में विकसित किया। सफदरजंग की मृत्यु ५ अक्टूबर १७५४ को हुयी। १७६४ ई० में उनके पुत्र सुजा-उद्-दौला (१७५४-१७७५ ई०) ने फैजाबाद को अपनी राजधानी बनाई। इनके शासन की अवधि में अवध प्रांत उत्तर भारत और बंगाल राज्य के बीच मध्यवर्ती राज्य था। वह इस राजवंश का सबसे शक्तिशाली शासक था। बक्सर की लड़ाई उनके शासन काल की सबसे महत्वपूर्ण घटना है। इस लड़ाई में सुजा-उद्-दौला को ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कम्पनी ने हराया था, जिसके

गुलाबबाड़ी एवं शुजा-उद्-दौला का मकबरा

बहू बेगम का मकबरा

बाद उन्हें भारी राजस्व का भुगतान करने के लिए बाध्य किया गया था तथा अपने दरबार में ब्रिटिश प्रतिनिधि को जगह भी देनी पड़ी थी।

सुजा-उद्-दौला का निधन २६ जनवरी १७७५ ई० में हुआ था। इनकी पत्नी को बहु-बेगम के नाम से जाना जाता है, जो मृत्यु पर्यन्त फैजाबाद में रहीं।

सुजा-उद्-दौला के उत्तराधिकारी असफ-उद्-दौला ने लखनऊ को अपनी राजधानी बनाई। उपर्युक्त नवाबों के शासन काल के दौरान फैजाबाद में कई स्मारकीय भवन बनाए गए, जिनमें से गुलाबबाड़ी, बहू बेगम का मकबरा, बनीखानम की कब्र और हाजी इकबाल की कब्र भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के केन्द्रीय संरक्षित स्मारक है।

गुलाबबाड़ी एवं शुजा- उद्-दौला का मकबरा :- गुलाबबाड़ी नवाबी वास्तुशैली का सुन्दर नमूना है। इस चारबाग शैली में निर्मित बगीचे को सफदर जंग ने बनवाया था। १७७५ ई० में जब नवाब शुजा-उद्-दौला की मृत्यु हुई तो उन्हे इसी मकबरे में दफनाया गया। इस मकबरे का निर्माण अनेक चरणों में किया गया। यह अच्छे अनुपात में निर्मित एक प्रभावशाली भवन है। इसमें प्रवेश करने के लिए दो बड़े वाह्य प्रवेशद्वार हैं और तीसरा द्वार मकबरे तक ले जाता है। यह लखौरी ईंटों से निर्मित है जिस पर चूने का प्लास्टर किया गया है।

गुलाबबाड़ी में दो बाहरी प्रांगण एवं एक मुख्य प्रांगण है। बाहरी प्रांगण में प्रवेश के लिए मेहराबदार विशालकाय दो सुन्दर दरवाजे हैं। यह प्रवेश द्वार चौक से गुलाबबाड़ी जाने वाले मार्ग पर बने हैं। दूसरे प्रांगण में प्रवेश हेतु भी भव्य प्रवेशद्वार है। मुख्य द्वार से उत्तर की ओर बाहरी दीवार से लगी एक मस्जिद तथा उसके दक्षिण की तरफ एक दो मंजिला इमारत है जिसे बनाने का ध्येय अज्ञात है। यह संभवतः इमामबाड़ा है। बगीचे के चारों ओर पानी की नालियां हैं। मकबरा त्रितलीय है जिस पर गुम्बद निर्मित है। प्रथम तल एक बड़ा वर्गाकार चबूतरा है जिस पर एक बड़ा वर्गाकार केन्द्रीय कक्ष है जिसके चारों ओर छोटे वर्गाकार और आयताकार कक्ष और स्तम्भ युक्त बरामदे हैं। कब्र केन्द्रीय कक्ष में स्थित है। यह ऊँची छत से युक्त छोटा वर्गाकार केन्द्रीय भाग है जिसके ऊपर गोलाकार गुम्बद के साथ वातायन बने हैं।

बहूबेगम का मकबरा:- दूसरा महत्वपूर्ण मकबरा बहूबेगम का है जो नवाब शुजा-उद्-दौला की पत्नी और नवाब आसफ-उद्-दौला की मां थी। उनकी मृत्यु १८१६ ई० में हुई। यह मकबरा भी कई चरणों में बना । इसकी शुरुआत उनके सलाहकार द्वारा १८१६ ई० में की गई। बाद में इसका निर्माण अन्य संरक्षकों ने किया। स्मारक में बाहरी प्रांगण और मुख्य प्रांगण है। बाहरी प्रांगण आकार में बड़ा और आयताकार है। इसमें प्रवेश के लिए एक भव्य मेहराबदार प्रवेशद्वार है जिसमें कई कमरे बने हैं। द्वार के चारों तरफ दीवारों के सहारे आवास हेतु कमरे बने हैं। पूर्व दिशा में एक अन्य द्वार है तथा तीसरा द्वार दक्षिण में है जिससे होकर मुख्य प्रांगण में प्रवेश किया जा सकता है। यह वृहद चतुर्भुजाकार प्रांगण एक बाह्य दीवार से घिरा है जिसके कोनों पर अष्टकोणीय बुर्ज बने हैं। इसमें पूर्व और पश्चिम दिशा में दो छोटे मेहराबदार द्वितलीय मंडप बने हैं। मकबरे के भूतल पर बहुत बड़ा चबूतरा बना है। इसके मध्य में वर्गाकार कक्ष है, जिसके चारों ओर वर्गाकार और आयताकार कक्षों की श्रृंखला और संकरे गलियारे बने हैं। इस तल का मध्य भाग पत्थरों से निर्मित बिना अलंकरण के है, लेकिन इसका बाह्य भाग ईंटो से बना और अलंकृत है। किनारों पर मेहराबदार

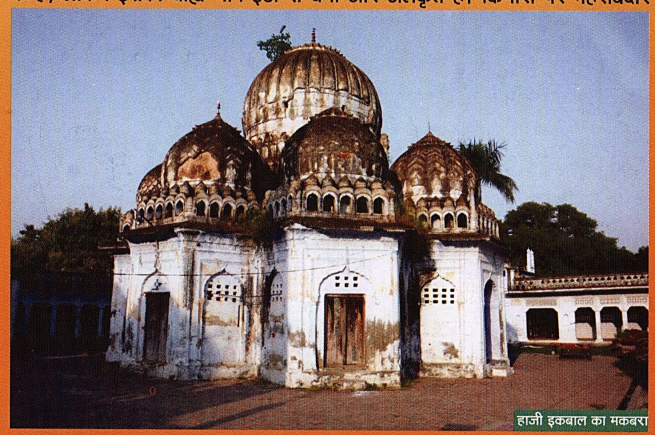
हाजी इकबाल का मकबरा